रीतिकाल का प्रवर्तक कवि कौन ?

रीतिकाल का प्रवर्तक किसे माना जाए ? यह प्रश्न विवादास्पद है. कुछ विद्वान् आचार्य केशवदास को रीतिकाल का प्रवर्तक मानते हैं, तो कुछ आचार्य चिन्तामणि त्रिपाठी को यह गौरव देना चाहते हैं.

Scanned with CamScanner

डॉ. श्यामसुन्दर दास का मत है कि "यद्यपि समय विभाग के अनुसार केशव भक्तिकाल में पड़ते हैं और गोस्वामी तुलसीदास आदि के समकालीन होने तथा रामचन्द्रिका आदि ग्रन्थ लिखने के कारण वे केवल रीतिवादी नहीं कहे जा सकते हैं, परन्तु उन पर पिछले काल के संस्कृत साहित्य का इतना अधिक प्रभाव पड़ा था कि अपने काल की हिन्दी काव्यधारा से पृथक् होकर वे चमत्कारवादी कवि हो गए हैं और हिन्दी रीतिग्रन्थों की परम्परा के आचार्य कहलाए." इससे कुछ लोग यह निष्कर्ष निकालते हैं कि केशव को श्यामसुन्दर दासजी ने रीतिकाल का प्रवर्तक माना है. वस्तुतः यह निष्कर्ष निकालना उचित नहीं है. कारण इस कथन से यही स्पष्ट होता है कि केशव ने रीतिग्रन्थों का सृजन किया और इसमें वे आदिम आचार्य हैं. यद्यपि श्यामसुन्दर दास का ऐसा मानना भी निराधार है, क्योंकि केशव से पूर्व भी कई रीति ग्रन्थ लिखे गए हैं. उदाहरणार्थ सूरदास का 'साहित्य लहरी', नन्ददास का 'रसमंजरी' और कृपाराम की 'हिततरंगिणी' व करनेस का 'कर्णाभरण'. हाँ, यह बात अवश्य है कि इन ग्रन्थों में काव्यशास्त्र का गम्भीर व सांगोपांग विवेचन नहीं हुआ है. पहले-पहल इस पद्धति पर रचना करने वालों में आचार्य केशव का ही नाम आता है. 'रामचन्द्रिका' तक में यही प्रवृत्ति देखी जा सकती है.

आचार्य शुक्ल का मत उपर्युक्त मत के विपरीत है. उनकी दृष्टि में रीतिकाल के प्रवर्तक आचार्य केशव न होकर चिन्तामणि हैं. शुक्लजी यह मानते हैं कि "केशवदास ने काव्य के सभी अंगों का निरूपण शास्त्रीय पद्धति पर किया है. इसमें सन्देह नहीं है कि काव्य-रीति का सम्यक् विवेचन और समावेश पहले-पहल आचार्य केशव ने किया." यह मानकर भी शुक्लजी आचार्य केशव को रीतिकाल के रीति ग्रन्थों के प्रवर्तक का श्रेय देने में हिचकते हैं. वे कहते हैं कि हिन्दी में रीति ग्रन्थों की अविरल और अखण्डित परम्परा का प्रवाह केशव की 'कविप्रिया' के प्रायः पचास वर्ष पीछे चला है और वह भी एक भिन्न आदर्श लेकर, केशव के आदर्श को लेकर नहीं, परन्तु शुक्लजी की इस मान्यता का आधार क्या है ? इसके उत्तरस्वरूप आचार्य शुक्ल का यह मत अवलोकनीय है-"साहित्य की मीमांसा प्रायः बढ़ते-बढ़ते जिस स्थिति पर पहुँच गयी थी, उस स्थिति से सामग्री न लेकर केशव ने उसके पूर्व की स्थिति से सामग्री ली थी. उन्होंने हिन्दी पाठकों को काव्यांग निरूपण की उस पूर्व दिशा का परिचय कराया था, जो भामह और उद्भट के समय थी, उस उत्तर दिशा का नहीं जो आचार्य आनन्दवर्धन, मम्मट और विश्वनाथ द्वारा विकसित हुई. ..... पर केशवदास के उपरान्त तत्कालीन रीति ग्रन्थों की परम्परा चली नहीं. 'कविप्रिया' के 50 वर्ष पीछे उसकी अखण्ड परम्परा का प्रारम्भ हुआ. यह परम्परा केशव के दिखाए हुए पुराने

Scanned with CamScanner

आचार्यों (भामह, उद्भट आदि द्वारा) के मार्ग पर न चलकर परवर्ती आचार्यों के परिष्कृत मार्ग पर चली. काव्य के स्वरूप और अंशों के सम्बन्ध में हिन्दी के रीतिकार कवियों ने संस्कृत के इन परवर्ती आचार्यों का मत ग्रहण किया. हिन्दी के रीति ग्रन्थों की अखण्ड परम्परा चिन्तामणि त्रिपाठी से चली. अतः रीतिकाल का आरम्भ उन्हीं से मानना चाहिए.

कतिपय विद्वान् केशव को बहुमुखी प्रतिभा का धनी मानकर यहाँ तक प्रमाणित करते हैं कि केशव तो रीतिकालीन सभी प्रवृत्तियों के प्रवर्तक हैं. अधिसंख्य आलोचक मानते हैं कि केशव केवल रीति परम्परा के ही प्रवर्तक नहीं ठहरते हैं. प्रत्युत रीतिकालीन साहित्य में उपलब्ध होने वाली अन्य प्रमुख प्रवृत्तियों के भी प्रवर्तक ठहरते हैं. हम यह निस्संकोच भाव से कह सकते हैं कि रीति परम्परा को सुप्रवर्तित और पूर्णतः प्रतिष्ठित करने का श्रेय केशव को ही है.

Scanned with CamScanner